ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 86-88**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

लोकतंत्र और मध्यम वर्ग

डॉ0 विजय सिंह
ग्राम–भगवान बिगहा पो0– बैदराबाद थाना+जिला–अरवल (बिहार), भारत

Received-15.10.2024, Revised-22.10.2024, Accepted-27.10.2024 E-mail : akbar786ali888@gmail.com

सारांशः अब मध्यवर्ग भारतीय लोकतन्त्र की चालक सीट पर नहीं है। आजादी के बाद आधी सदीं से थोड़ा पहले तक लोकतन्त्र के मायने और इसके संचालन का तरीका मध्यवर्ग ने तय किया था और तब यह पूरी प्रक्रिया इसी मध्यवर्ग के हित में थी। सब कुछ बड़ें व्यवस्थित तरीके से संचालित हो रहा था, एक पार्टी थी, जैसा कहते थे लोग उसी तरह से वोटिंग करते थे, सब एक–दूसरे से खुश थे। अवधि में मध्यवर्ग ने कभी भी लोकतन्त्र के लिए असुविधाजनक स्थिति नहीं पैदा की। मजे में लोकतन्त्र चलता रहा।

कुंजीभूत शब्द– भारतीय लोकतन्त्र, मध्यम वर्ग, परिचालन, समाज, निरक्षर, उदासीनता, तानाशाह, आपातकाल,वोटिंग,पलायन

विकासशील देशों में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ लोकतान्त्रिक व्यवस्था इतने सुचारु तरीके से आधी सदीं तक चलती रही। यह अपने–आप में एक आश्चर्य की तरह है और बहुत ही रोचक भी। विकासशील देशों में भारत की इस व्यवस्था का कोई मुकाबला नहीं है, लेकिन अब लोकतन्त्र का परिचालन मध्य वर्ग के हाथों से निकल गया है। समाज का एक बड़ा हिस्सा जो भागीदारी से वंचित था, जो निरक्षर था, झुग्गियों में रहता था लेकिन बड़ी संख्या में था, उसने आगे आकर लोकतन्त्र के संचालन का सूत्र अपने हाथ में ले लिया। आखिर लोकतन्त्र उसके लिए भी तो था। इसके बाद मध्यवर्ग की उदासीनता बढ़ने लगी। इसे इस तथ्य से भी समझा जा सकता है कि भारत का मध्यवर्ग ही है जो देश की व्यवस्था में सुधार के लिए एक तानाशाह की जरूरत को प्रचारित कर रहा है। उन्हें अब लगने लगा है कि यह बेडौल लोकतन्त्र ठीक नहीं है, क्योंकि यहाँ सबकुछ अव्यवस्थित–सा हो गया है। वे एक तानाशाह की जरूरत महसूस करने लगे हैं जो सबको अपनी जगह पर रखता। इसकी वजह यह है कि यह वर्ग सिर्फ अपना हित देखना चाहते हैं, कुछ हद तक इसने भी अपने आपको समाज की सच्चाइयों से अलग कर लिया है। यह चाहता है कि कोई ऐसा आये जो गरीब और गंदे लोगों की बढ़त को रोक दे। यही कारण है कि सत्तर के दशक में आपातकाल की स्थिति को बड़ी तेजी से इस वर्ग ने स्वीकार किया था। हालाँकि जब अपना हित सधता नहीं दिखा तो यही वर्ग उसके खिलाफ भी खड़ा हुआ।

मध्यवर्ग की इस उदासीनता का एक कारण लोकतन्त्र की थकान भी है। इसमें सन्देह नहीं है कि लोकतन्त्र की थकान भी है। इसमें सन्देह नहीं है कि लोकतन्त्र पर थकान हावी है और मध्यवर्ग इसमें परिवर्तन चाहता है। हर चीज के साथ जीने की एक सीमा होती है। मध्यवर्ग के लिए वह सीमा आ चुकी है। वह समझ चुका है कि चुनाव और सिद्धान्त में कोई रिश्ता नहीं रह गया है। आखिरकार वह इससे आधी सदी तक जुड़ा रहा है। इसलिए उसे इससे विरक्ति हो गयी है। दूसरे मध्यवर्ग बहुत कायर है, हालाँकि वह इसे स्वीकार नहीं करता है। यही वर्ग है जो सबसे ऊँची आवाज में चिल्ला रहा है कि राजनीति बहुत गंदी हो गयी है। वह बताता है कि अब राजनीति में अच्छे लोग नहीं रह गए हैं, लेकिन यदि उसे खुद अपने सुरक्षित खोल में से निकल कर राजनीति में जाने को कहा जाये तो वह कतई ऐसा नहीं करेगा। इसी विरोधाभास के कारण मताधिकार के इस्तेमाल से पलायन का रास्ता निकला है।

एक और धारणा है जिसने मध्यवर्ग को मताधिकार के प्रयोग से पलायन का रास्ता दिखाया है, वह है अपनी स्थिति को कमतर करके आँकना। उसके मन में यह धारणा बैठ गयी है कि मेरे एक मत दे देने से क्या होगा। आजादी के समय या उसके बाद तक इस वर्ग की यह धारणा थी कि जो हूँ मैं हूँ और मेरे किए ही सबकुछ होगा, लेकिन पिछले पचास वर्ष में इस पढ़े–लिखे और जिम्मेवार वर्ग का यह ह्रास हुआ है। देश के मध्यवर्ग की वैयक्तिकता का क्षरण हुआ है। लोकतन्त्र में एक व्यक्ति कितना महत्त्वपूर्ण होता है उसने यह समझना बन्द कर दिया है। यह हमारे भारत में हो रहा है जहाँ का धर्म सिर्फ वैयक्तिकता का पोषण करता है। वह एक व्यक्ति के मोक्ष के सिवा किसी सामूहिक परिष्कार की बात कहीं नहीं कहता है और वहाँ के मध्यवर्ग की (जो धर्म का सबसे बड़ा पोषक है) वैयक्तिकता का क्षरण हो रहा है। यह बहुत ही रोचक स्थिति है जिसकी झलक लोकतन्त्र में मिलती है। आज यदि मध्यवर्ग से कोई व्यक्ति ऐसा निकलता है जो समाज में सुधार करना चाहता है या कोई परिवर्तन लाना चाहता है, तो समाज उसकी हँसी उड़ता है। यह मध्यवर्ग का एकदम गैर–जिम्मेदाराना पलायन है।

इस मध्यवर्ग की एक बड़ी खूबी है जो आजादी के पहले से है और आज भी कायम है। वह खूबी यह है कि यह वर्ग अपनी पूरी प्रवृत्ति में व्यापक रूप से धर्मनिरपेक्ष है। इसकी एक वजह यह हो सकती है कि यह वर्ग इतना स्वार्थी है कि धर्मनिरपेक्ष हो गया है। लेकिन, ऐसा है। इसकी माँगें और जरूरतें बहुत हैं, जबकि व्यवस्था की सीमाएँ हैं। कोई भी व्यवस्था इनकी सभी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकती, क्योंकि मध्यवर्ग की अपेक्षाओं में कोई विवेकसंगत सन्तुलन नहीं है। उनकी सोच काफी संकीर्ण है। यह वर्ग अपने आपको सबसे ज्यादा शोषित मानने लगा है। और, अपनी अपेक्षाओं, अपनी जरूरतों के आगे इसे काई हकीकत नहीं दिखाई देता है। ये शिक्षा, स्वास्थ्य, पीने के पानी, बिजली वगैरह की माँग करते हैं। धार्मिक–चुनावी मुद्दे काफी बाद में आते हैं। और यह लोकतन्त्र की वजह से हुआ है। इसलिए कभी–कभी ऐसा लगता है कि देश की हर समस्या का समाधान लोकतन्त्र है। यदि कोई गड़बड़ी है तो उसे लोकतन्त्र द्वारा ही दूर किया जा सकता है, किसी दूसरी व्यवस्था द्वारा नहीं।

अन्त में मध्यवर्ग की उदासीनता का कारण वह हकीकत है जिसे उसने पिछले साठ वर्षों में अपने आचरण से सीखा है। वह सोचता है कि कोई सत्ता में आये हमारे लिए कुछ नहीं सोचेगा और दूसरा यह कि हमारी अपेक्षाएँ तो नहीं ही पूरी होंगी। इसलिए वह चुनाव के दिन घर में रहता है, फ्रूटी या पेप्सी पीता है और आराम करता है।

चुनाव के समय अक्सर राजनीतिक चर्चा कोई नयी बात नहीं है। यह सम्भ्रांत–सुशिक्षित, साधन सम्पन्न वर्ग और कथित बुद्धिजीवी अपने ड्राइंग–रूम में राजनीति पर चर्चाएँ करते दिखाई देते हैं। भ्रष्ट राजनेताओं का कच्चा चिट्ठा उनके पास होता है। इन भ्रष्ट राजनेताओं के भ्रष्टाचार के चलते देश पतन की ओर जा रहा है इसकी चिन्ता उनकी चर्चाओं में दिखाई देता है। राजनीति का अपराधीकरण या अपराध राजनीतिकरण और घोटाले ऐसी चर्चाओं के प्रमुख विषय रहते हैं। यह वर्ग क्षोभ व्यक्त करता है कि संसद में अपराधी प्रवृत्ति के लोग चुन–चुन कर पहुँचने लगे हैं, और बड़ी राष्ट्रीय पार्टियाँ उन्हें अपना उम्मीदवार बनाने लगी हैं। वे राजनेताओं

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

की अकर्मण्यता पर गंभीर चर्चा भी करते हैं और 80 प्रतिशत मतदातावर्ग का उपहास भी उड़ाते हैं, जो अपना अमूल्य वोट देकर ऐसे लोगों को संसद तक पहुँचाते हैं। अपने ड्राइंग–रूम में बैठकर ऐसी चर्चाओं से उन्हें लगता है कि वे देश और समाज के सच्चे हितैषी हैं। इसलिए अपना कीमती समय उन चर्चाओं में लगा रहे हैं। सरासर झूठ है यह! धोखा दे रहे हैं ऐसे लोग अपने आपको, देश और समाज को भी, उनकी यह चर्चाएँ उनके हास्य–विनोद का एक अंग तो समझी जा सकती हैं, देश और समाज के सुदंर भविष्य के लिए गंभीर चिंतन–मनन नहीं, क्योंकि उनकी यह चर्चाएँ जो चाय की चुस्कियों और ह्विस्की के पैग के साथ शुरू होती हैं, उसी के अन्दर डूब कर रह जाती हैं। ड्राइंग–रूम से बाहर निकलकर जब वह एक–दूसरे को विदा कर रहे होते हैं, तो अन्दर ड्राइंग–रूम में चल रही चर्चा का कोई चिह्न उनके चेहरे पर दिखाई नहीं देता। होठों पर ठहाकेदार हँसी होती है, मुख–मुद्रा से अपार संतोष व प्रसन्नता झलकती है, फिर मिलने के वादे के साथ वे अपने मित्रों को विदा करते हैं, और फिर अपनी व्यस्त दिनचर्या का एक अंग बन जाते हैं। उनकी देशभक्ति, समाज के प्रति उनकी चिन्ता, मात्र उनके ड्राइंग–रूम डिस्कशन तक सीमित रहती है। इससे बाहर निकल कर समाज में जागरूकता लाने के विषय पर वह सोचते ही नहीं।

देश का वह बुद्धिजीवी वर्ग जो दिन–रात कांफ्रेंस, सेमिनार व सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में व्यस्त रहता है। पर्यावरण, धर्म–निरपेक्षता, सांप्रदायिक सद्भाव जैसे सैकड़ों विषयों पर अपने अमूल्य विचार व्यक्त करते रहते हैं। सैकड़ों महापुरुषों के जन्म–दिवसों अथवा पुण्य–तिथियों पर उनके जीवन से लाभान्वित होने का पाठ जनता को पढ़ते रहते हैं, लेकिन चुनावों के अवसर पर उनकी चुनावी चर्चा भी ड्राइंग–रूम अथवा चायखानों तक ही सीमित रहती है। अपने ज्ञान का भण्डार लेकर भी जनता के बीच जाना अनिवार्य नहीं समझते, जबकि जानते हैं कि अपने जैसे कुछ लोगों के साथ उठकर ड्राइंग–रूम अथवा चायखानों में कि जानेवाली इन चर्चाओं से देश व समाज का कुछ भला होनेवाला नहीं है। क्यों नहीं करते गोष्ठियाँ और सेमिनार इस विषय पर? जब तक देश को एक ईमानदार व सक्षम नेतृत्व नहीं मिलेगा, न देश का विकास होगा न समस्याओं का समाधान, और यह ईमानदार व सक्षम नेतृत्व चुना जाना है जनता के द्वारा कैसे वह अपने वोट का प्रयोग करे यह समझाना क्या इस बुद्धिजीवी वर्ग का कर्तव्य नहीं है। क्या उन्हें निरन्तर सामाजिक मंचों के माध्यम से जनता के बीच जाकर उन्हें यह नहीं बताना चाहिए कि कैसे सोचे–समझे बगैर दिया गया उनका वोट समूचे देश या समाज के लिए हानिकारक हो सकता है। देश पर अक्षम सरकार का शासन स्थापित हो सकता है।

लेखक, कवि, शायर, पत्रकार समाज के उस जागरूक वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं जो समय–समय पर देश व समाज को दिशा देने के योग्य समझे जाते हैं। मुशायरों और कवि–सम्मेलनों में शायरों एवं कवियों की राजनीति पर रचित रचनायें समाज में जागरूकता का कार्य करती हैं और उनकी रचनाओं पर श्रोताओं की त्वरित प्रतिक्रिया भी सामने आ जाती है, जब उनके ऐसे शेर अथवा छन्दों को सराहा जाता है, उसकी प्रशंसा की जाती है, जो किसी भ्रष्ट नेता पर कटाक्ष हो अथवा सुन्दर नेतृत्व की कल्पना में कहा गया हो। शायर अथवा कवि ऐसे समय में जबकि चुनाव प्रक्रिया चल रही हो अपने कलाम और कविताओं के माध्यम से निष्पक्ष समाजसेवी के रूप में सामने क्यों नहीं आते? वे सामने तो आते हैं, परन्तु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में किसी राजनीतिक पार्टी अथवा उम्मीदवार के द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम में, उसके प्रचार का अंग बनकर। ऐसे में देश व समाज की धरोहर इन महान् शायरों अथवा कवियों की वह प्रतिभा जो देश व समाज को उचित मार्ग दर्शन दे सकती है, जाने–अनजाने राजनीति की भेंट चढ़ जाती है।

धनाढ्य वर्ग, उद्योगपति, पूँजीपति जो चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने का सामर्थ्य रखते हैं और जो लगभग सभी प्रमुख राजनीतिक पार्टियों के पोषक हैं, यदि एक बार एक चुनाव में अपने इस काले–सफेद धन का प्रयोग राजनीतिक दलों के लिए न करके देश व समाज के हित में व्यय करने का निर्णय ले लें तो संसद का परिदृश्य बदल सकता है। वह पैसा जो राजनीतिक दलों के द्वारा ऐसे प्रत्याशियों को जिताने पर खर्च किया जाता है जो उनकी पार्टी के लिए तो महत्त्वपूर्ण है, परन्तु देश व समाज के लिए इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है। यदि वही पैसा देश के विकास पर व समाज में राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न करने पर खर्च कर दिया जाये तो ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, देश व समाज के सच्चे हितैषी नागरिकों के संसद में पहुँचने के अवसर बढ़ जायेंगे। चूँकि आज देश का यह धनाढ्य वर्ग, बुद्धिजीवी, लेखक, शायर, पत्रकार इत्यादि पूरी तरह अपने धन व प्रतिभा का प्रयोग राष्ट्र व समाज के प्रति नहीं कर पा रहे हैं, इसलिए देश को सुन्दर नेतृत्व नहीं मिल पा रहा है। ऐसा नहीं है कि यह बात सभी पर लागू होती हो या वर्ग इस दिशा में कार्य ही न कर रहा हो। तात्पर्य यह है कि यदि यह उपर्युक्त वर्णित वर्ग एक बार भी अपनी समूची शक्ति चाहे वह धन सम्पदा के रूप में हो अथवा प्रतिभा के रूप में एक बार जनचेतना जाग्रत करने में लगा दे तो निश्चित ही इसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे, अन्यथा होगा यही कि सीधे–सादे भोले–भाले मतदाता को भ्रमित करने के लिए यह राजनीतिक दल अपने ओछे हथकंडों का प्रयोग करते रहेंगे और देश व समाज के पतन की प्रक्रिया जारी रहेगी।

हम कैसे देश के उस गरीब, अभावों से ग्रस्त 80 प्रतिशत मतदाताओं पर यह जिम्मेदारी थोप सकते हैं कि वह अपनी वोट से एक सुन्दर सुयोग्य नेतृत्व चुनकर भेज देंगे। हमारे देश का वह गरीब मजदूर, किसान, सब्जी और फल बेचने वाला, रिक्शा व ताँगा चलाने वाला, झल्ली ढोने वाला जो दिन भर मजदूरी करता है और जब शाम को घर पहुँचता है तो बेहद थका हुआ और टूटा हुआ होता है। दिन भर की इस जान तोड़ मेहनत के बदले केवल कुछ सिक्के उसके हाथ में होते हैं, जो उसके घर–परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बहुत कम होते हैं, जिसका भूखा–प्यासा परिवार पेट की रोटी के लिए उसके कदमों की आहट का इन्तजार कर रहा होता है और जब वह आधे पेट खाकर चिन्ताओं में डूबा हुआ सोने का प्रयास कर रहा होता है, तो उसकी पत्नी दिन–भर की परेशानियों की दास्तान और आनेवाले कल की आवश्यकताओं का ब्यौरा उसके कान में डाल रही होती है, वह जिसके पास न सिर छिपाने को जगह है, न चैन से दो वक्त की रोटी का इन्तजाम, न शिक्षा, उसके अन्दर जागरूकता उत्पन्न कर सकी है और न दिन–रात की भागदौड़ ने उसे इतना अवसर ही प्रदान किया है कि वह वोट के सही गलत प्रयोग का सटीक निर्णय ले सके। उसके कंधों पर हमने यह बोझ डाला हुआ है कि वह समूचे देश के लिए एक ईमानदार, सुयोग्य, कर्तव्यनिष्ठ नेतृत्व चुनकर दे। उससे अपेक्षा रखते हैं कि हम वही सारे आदर्शों का निर्वाह करेगा, वही देश को सशक्त एवं सक्षम नेतृत्व देगा जो स्वयं न सशक्त है न सक्षम और जो सशक्त व सक्षम है, पर मूक दर्शक बना रहेगा, बस अपने ड्राइंग–रूम में चर्चा करेगा। इच्छा हुई तो वोट डाल दियाय अथवा यह भी नहीं, फिर तो होगा यही कि इस गरीब मजदूर को कहीं प्रलोभन से, कहीं आँसुओं से, तो कहीं छल–कपट से बहकाकर उसका वोट हथिया लिया जाएगा और दूसरों को समझाने का दायित्व निभाने वाले लोग अपने ड्राइंग–रूम के अन्दर ही चर्चाओं में व्यस्त रहेंगे।

गरीब मतदाता वोट माँगने वाले के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित होता है कि वह यह सोचकर ही प्रसन्न हो जाता है कि आज इतना बड़ा आदमी भी उससे कुछ माँग रहा है और जो माँग रहा है उसके दे देने से भी उसके पास से कुछ नहीं जानेवाला है। उस

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

समय वह यह नहीं सोच पाता कि यह बड़े और छोटे का अन्तर इसी वोट ने पैदा किया है। आज वह अगर अभावग्रस्त है और वोट माँगने वाला वैभवशाली जीवन जी रहा है तो इसका कारण उसका वोट ही है और यदि यह प्रक्रिया यूँ ही चलती रही तो यह कमजोर वर्ग यूँ ही वोट देता रहेगा और सशक्त, शक्तिशाली वर्ग जो एक सशक्त नेतृत्व प्रदान करने में सहयोग दे सकता है अपने ड्राइंग–रूम मं बैठा चर्चा करता रहेगा। यदि यह सिलसिला जारी रहा, तो देश को कैसा नेतृत्व मिलेगा और उसका उत्तरदायित्व किस पर होगा, यह समझा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Gabardi, Wayne, (2001) : Contemporary Models of Democracy, polity press 2001.
2. Held, David (2006) : Models of Democracy, Stanford University press, 2006.
3. King, Roger (1986) : The State in modrn society, pallgrave Macmilan, London.
4. Lively, Jack (1975) : Democracy, John Wiley & sons, Inc., New York, 1975.
5. Mitra, Subrata K. and Singh, V. B. (1999) : democracy and Cocial Change, in India : A cross- sectional Analysis of The National Electorate, sage publications, New Delhi.
6. Weiner, Myron and Kothari, Rajni (1965) : Indian voting Behaviour, Firma K. L. Mukhopadhayay, Calcutta.

*****